Shri Lalitamba Nirajanam

श्रीललिताम्बा-नीराजनम्

Document Information

Text title : Lalitamba Nirajanam

File name : lalitAmbAnIrAjanam.itx

Category : devii, AratI, dashamahAvidyA, lalitA, devI

Location : doc_devii

Transliterated by : Aaditya Kalyanaraman

Proofread by : Aaditya Kalyanaraman

Latest update : December 12, 2020

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

September 16, 2023

sanskritdocuments.org

श्रीललिताम्बा-नीराजनम्

श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः ।
जय देवि!, जय देवि!, जय सुन्दरि तनये!, जय सुन्दरि ललिते! ।
शश्वद्-वसतिं कुरु भोरीश्वरि! मम हृदये ॥ जय देवि!, जगदम्ब!।

बिन्दु-त्रिकोण-सहितं षट्-कोणं वृत्तम् । तदुपरि वसु-दल-पत्रं वर्तुलमपि धत्तम् ।
द्वि-गुणी-कृत-वसु-पत्रं मोहित हर-चित्तं द्वार चतुष्टय-निर्मित-यन्त्रोपरि तन्त्रम् ।
जय देवि!, जय देवि!, जय सुन्दरि तनये! जय सुन्दरि ललिते! ।
शश्वद्-वसतिं कुरु भोरीश्वरि! मम हृदये ॥ जय देवि! जगदम्ब!॥ १॥

वामे कलशे पूजित-पूरितमाधारम् । तस्मिन्नर्पित-पूजित-पूरितमाधारम् ॥

एवं पञ्चावरणित-कर्णित-गुण-सारम् । मां देहि त्वं-भुवने! दुर्घट-संसारम् ॥

जय देवि!, जय देवि!, जय सुन्दरि तनये!, जय सुन्दरि ललिते! ।
शश्वद्-वसतिं कुरु भोरीश्वरि! मम हृदये ॥ जय देवि!, जगदम्ब!॥ २॥

कलशामृत-जल-पूजित-नव-पात्र-समेतम् । गणपति-योगिनी बटुक-क्षेत्राधिप-युक्तम् ॥

अर्चन-विधिना सहितं श्रीगुरु-विधि-युक्तं, तारक-पण्डित-विद्या-भक्त्याऽखिल-दत्तम् ।
जय देवि!, जय देवि!, जय सुन्दरि तनये!, जय सुन्दरि ललिते! ।
शश्वद्-वसतिं कुरु भोरीश्वरि! मम हृदये ॥ जय देवि!, जगदम्ब!॥ ३॥

इति श्रीललिताम्बा-नीराजनं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by Aaditya Kalyanaraman

Shri Lalitamba Nirajanam

pdf was typeset on September 16, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*